महिलाओं को मोहरा बनाती राजनीति

यहां स्कैन करें

तुलसी जयकुमार | प्रोफेसर, एसपीजेआईएमआर

तृषा कृष्णन और जॉर्जिया मेलोनी के साथ आभासी दुनिया में जैसा बर्ताव हुआ, उससे यह फिर पुष्ट हुआ कि मर्दों को कमजोर दिखाने के लिए स्त्रियों का इस्तेमाल किया जाता है।

मौजूदा राजनीति में, जब विरोधी असल मुद्दों पर जीत नहीं पाते, तो वे एक पुरानी और घिनौनी चाल का सहारा लेते हैं। वे 'विरोधियों' की नजदीकी महिलाओं को मोहरे की तरह इस्तेमाल करने लगते हैं। यह तरीका पितृसत्ता जितनी ही पुरानी सोच पर टिका है कि सार्वजनिक जीवन में महिला कोई स्वतंत्र हस्ती नहीं होती, बल्कि एक ऐसी कमजोरी है, जिसका इस्तेमाल पुरुष के खिलाफ किया जा सकता है।

सार्वजनिक जीवन में सक्रिय महिलाओं को 'प्रॉक्सी टारगेट' किया जाता है। किसी अन्य के लिए उन्हें निशाने पर ले लिया जाता है। राजनीति में सक्रिय लोग सस्ती बयानबाजी करके अपना फायदा तो उठा लेते हैं, लेकिन लक्षित महिलाओं से उनकी मर्जी, सम्मान और मेहनत से अर्जित पहचान छीन लेते हैं। यह खुलेआम लैंगिक भेदभाव से आगे बढ़कर महिलाओं के प्रति छिपी हुई नफरत (मिसोजिनी) और पूर्वाग्रह है।

फिल्म अभिनेता विजय के औपचारिक रूप से राजनीति में उतरने और अपनी पार्टी शुरू करने के बाद तमिलनाडु की सियासत में हुई हालिया घटनाक्रमों पर गौर करें। उनकी राजनीतिक सोच पर बात करने के बजाय, आलोचक उनके खिलाफ जल्द ही व्यक्तिगत आक्षेप लगाने और चरित्र-हनन पर उतारू हो गए, जिसमें खासतौर से तृषा कृष्णन का जिक्र किया गया। तमाम बहसों, सोशल मीडिया मंचों और सार्वजनिक रैलियों में, विरोधियों ने विजय की राजनीतिक गंभीरता को कमतर दिखाने के लिए बार-बार तृषा का नाम लिया। इस जहरीले माहौल में, कृष्णन को, जिनका दो दशकों का फिल्मी करियर है और जो अपने दम पर आगे बढ़ने वाली कलाकार हैं, एक पेशेवर के तौर पर देखने के बजाय एक सियासी मोहरा बना दिया गया। उनकी मौजूदगी को ऐसे पेश किया गया, जैसे वह विजय की अविश्वनीयता या नैतिक पतन की वजह हैं।

इन सबसे वोटरों को बेहद दकियानूसी संदेश मिला कि कोई पुरुष नेतृत्व के लिए कितना उपयोगी है, उसको इसी बात से मापा जाना है कि महिलाओं के साथ उसके संबंधों को कितना सनसनीखेज बनाया जा सकता है। ऐसा करते हुए महिला को उसकी अपनी उपलब्धियों से अलग कर दिया जाता है और उसे एक राजनीतिक बोझ समझा जाता है।

यह प्रवृत्ति सिर्फ क्षेत्रीय राजनीति में नहीं है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति तक फैली हुई है। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में सोशल मीडिया के मंचों पर हो रही चर्चाओं पर गौर कीजिए। इसे दो संप्रभु राष्ट्रों के बीच रणनीतिक सहयोग और कूटनीतिक तालमेल के रूप में देखा जाना चाहिए था, लेकिन विरोधियों ने इसे 'मेलोडी' मीम में बदल दिया। कूटनीतिक तस्वीरों और आपसी बातचीत का बार-बार इस्तेमाल करके केंद्र सरकार का मजाक उड़ाया गया।

बेशक, कुछ लोगों ने इसे आभासी मजाक या लोगों की हल्की-फुल्की चुटकी बताकर खारिज कर दिया, लेकिन करीब से देखने पर यह पैटर्न एक अलग ही कहानी बयां करता है। इटली की पहली महिला प्रधानमंत्री होने के नाते मेलोनी की शख्सियत को यूरोपीय संघ की जटिल राजनीति और वैश्विक भू-राजनीति के संदर्भ में समझना चाहिए, लेकिन आलोचकों ने उनकी कूटनीति को इंटरनेट पर प्रचलित रूढ़ियों और सतही टिप्पणियों तक सीमित रखा, जिसमें उनके नीतिगत कदमों या विदेश संबंधों पर उनके रुख का कोई जिक्र नहीं किया गया।

तृषा कृष्णन और जॉर्जिया मेलोनी के साथ आभासी दुनिया में जैसा बर्ताव हुआ है, उनमें एक बात समान है कि पुरुषों को कमजोर दिखाने के लिए महिलाओं का इस्तेमाल किया जाता है। दोनों ही मामलों में राजनीतिक निशाने पर पुरुष नेता थे, पर खामियाजा उनकी नजदीकी महिला को भुगतना पड़ा, जिसकी सार्वजनिक छवि है। इससे राजनीति में मौजूद दोहरे मापदंडों की सच्चाई बेपरदा होती है। पुरुष नेताओं को उनकी सत्ता, उनके भाषणों, उनकी आर्थिक नीतियों और कामकाज के आधार पर आंका जाता है, पर जब विरोधी उन्हें हतोत्साहित या बदनाम करना चाहते हैं, तो वे जेंडर-आधारित नैतिकता व निजी संबंधों का सहारा लेते हैं।

यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब महिला आकर्षक हो। कृष्णन और मेलोनी इत्तेफाकन चुने गए उदाहरण नहीं हैं। खूबसूरत होना ही उन्हें लोगों का ध्यान खींचने की वजह बनाती है। ऐसी आकर्षक महिलाए दो वजहों से राजनीति के लिए मुफीद हो जाती हैं- पहली, उनके हाव-भाव चूंकि सुर्खियों में रहते हैं, इसलिए आरोपों को बल देने में आसानी होती है, और दूसरी, आलोचकों के लिए असल मुद्दों के बजाय तमाशे पर जोर देना आसान हो जाता है। जिस खूबी के कारण उनको सार्वजनिक जीवन में कामयाबी मिलती है, उसी खूबी का इस्तेमाल उनके खिलाफ किया जाता है।

इसी तरह की सार्वजनिक भूमिकाओं में मौजूद कम आकर्षक महिलाओं को यूं हथियार बनने की आशंका कम होती है। इससे इस पूरी प्रक्रिया का असली मकसद साफ हो जाता है कि यह सिर्फ लोगों की नजर में आने की सजा है। कोई महिला अपनी योग्यता के दम पर जितना अधिक लोगों का ध्यान खींचती है, वह किसी पुरुष को निशाना बनाने के हथियार के तौर पर उतनी ही ज्यादा काम की बन जाती है।

इस आदत से सार्वजनिक जीवन को बहुत नुकसान पहुंचता है। पहला, इससे राजनीतिक बातचीत का स्तर गिरता है और गंभीर वैचारिक विमर्श के बजाय चर्चा निजी आरोपों पर ठहर जाती है। दूसरा, यह एक खतरनाक माहौल बनाती है, जिसमें महिलाएं उन पेशों में आने, काम करने या बने रहने से कतराने लगती हैं, जिसमें ज्यादा दिखने या सुर्खियों में रहने का अवसर हो। जब पुरुष प्रतिद्वंद्विता में महिलाओं को शिकार बनाया जाने लगता है, तो हर महत्वाकांक्षी महिला को यही समझ में आता है कि किसी और के राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए मेहनत से बनाई गई उसकी पेशेवर पहचान पर हमला किया जा सकता है।

यदि समाज इस राजनीतिक प्रवृत्ति को बर्दाश्त करता है, तो वह एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देता है, जो महिलाओं के सम्मान और स्वायत्तता को सशर्त मानती है। लिहाजा, इस पर चर्चा करने की खास जरूरत है, क्योंकि यह आपसी प्रतिद्वंद्विता में महिलाओं को वस्तु के रूप में इस्तेमाल करके उनको नीचा दिखाने का एक कायरतापूर्ण प्रयास है। जब तक नेतागण नीतियों के आधार पर अपनी राजनीति नहीं करेंगे, महिलाएं यूं ही मर्दों की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की कीमत चुकाती रहेंगी और बलि की पात्र बनती रहेंगी।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)